“मोहनदास नैमिशराय के कथा साहित्य में दलित जीवन संघर्ष”

प्रस्तावना :

प्राचीन काल से लेकर आज तक पूरे विश्व में मनुष्य मनुष्य में भेदभाव दिखाई देता है। काला-गोरा, अमीर-गरिब, उच्य-निच्य इस प्रकार भेदभाव के मामले में सारे विश्व में भारत में कुछ जादा भेदभाव दिखाई देता है। जैसे, ब्राम्हण, शुद्र, जातिपाँती, अमीर-गरीब, शोषक-शोषित, दलित-संवर्ण इस तरह से भेदभाव दिखाई देता है। संवर्ण लोगो को कुछ जादा ही महत्व दिया गया था। ब्राम्हण को ही शिक्षा का अधिकार था।

भारत में वर्णव्यवस्था प्रचलित थी और आज भी कही न कही दिखाई देती है। हिंदु धर्म में ब्राम्हण, वैश्य, क्षत्रिय, और शुद्र इन चार भागों में विभाजन हुआ था। ब्राम्हण, वैश्य, क्षत्रिय इन समाज की सेवा करना ही शुद्रो का कार्य था। इस दलित जनता को शिक्षा लेने का कोई भी अधिकार नही था। इस समाज में ऐसे कहा जाता था कि दलितों का जन्म ही इन संवर्णो की सेवा करने के लिए हुआ है।

दलितों को उनके अधिकारो से छिन लिया गया था। उन्हें न तो सत्ता, संपती, धन-दौलत या सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक, धार्मीक, सांस्कृतिक इन सभी से कही दूर रखा गया था। इन लोगो को किसी भी प्रकार के अधिकार नही थे। उनका जीवन में या समाज में कुछ भी महत्व नही था। इस प्रकृती का नियम ही कुछ अलग है। यहाँ सब कूछ परिवर्तन होता रहता है। इन दलित लोगो के जीवन को बदलने के लिए या उनके अधिकारों के प्रति जागृत करने के लिए यहाँ पर कई विद्वान समाज सुधारक हुए और उन्होंने इन शोषित, पिड़ीत समाज को बदलने का प्रयास किया गया। और इन दलित जनता में परिवर्तन होने लगा। उनके अधिकार क्या है ? यह शिक्षा लेने से उन्हें मालुम होते गये। उनका शोषण किस तरह से हो रहा है। यह भी उन्हें समझ में आ रहा था। इन सभी के प्रति अब यह दलित जनता जागृत होने लगी।

महात्मा फुले, शाहु, आंबेडकर, इन जैसे महान समाज सुधारको ने हमारे देश में जो रूढियाँ, परंपरा अंधश्रद्धा, अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाकर सभी भारतवासीयों

को जगाने का कार्य किया। इतना ही नही उन्होने अपने जीवन में इन दलित, शोषित-पिड़ीत लोगो के लिए ही अपना जीवन व्यथित किया। दलितो को डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने कहा था "शिक्षित बनो, संघठीत बनो और संघर्षकरो" ; जब तक यह दलित समाज शिक्षित नही बनता संघठित नही बनता या संघर्ष नही करता तब तक इन्हें हिंदुधर्म में ऐसी ही हीनता भरी जींदगी जिना पडेगा। अन्याय के खिलाफ जब तक आवाज नही उठा पाएँगे तब तक उनके उपर अन्याय होता रहेगा। जब अन्याय के खिलाफ आवाज उठेगी तब ही अन्याय होने से रूकेगा।

दलित समाज में इन समाज सुधारको के कारण अन्याय और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने लगे और उन्हे अपने अधिकार, कर्तव्य की जानकारी होने लगी। वह अपने उपर हुए अत्याचार को शोषण को अब यह समाज समझने लगा है। इस तरह से सभी पिछडी जन जातियाँ शिक्षा के प्रती जागृत हो चूकी थी। शिक्षा ग्रहन करने से उन्हे अपने अधिकार समाज उन्हे किस प्रकार से पेश आ रहा है। उनका शोषण कोन और क्यो कर रहा है ? इन सभी बातों का विचार होने लगा था।

दलितो को पिढ़ीयों से किसी जमिनदार साहुकार, के घर घर में काम करना पडता था। इस काम के बदले उन्हें सिर्फ खाना ही मिलता था। न इन मेहनत का उन्हे मोबदला दिया जाता उलटा उन्हे ही शोषित किया जाता था। उन्हे जानवरों से भी जादा काम लगाते थे। इसमें महिला हो या पूरूष सभी को बत्तर काम करना पडता था। इन सभी शोषन से मुक्ति पाने के लिए शिक्षा ग्रहण करके अपने अधिकारो के प्रति जागृत होने लगे।

इन दलित लोगो को इतना ही नही बल्की उन्हें पानी के पास भी आने नही देते थे। या मंदिर मे प्रवेश भी नही मिलता मनुष्य होकर भी किसी प्राणीयों से बद्त्तर जीवन जीना पडता था। इस वास्तविकता को नकारा नही जा सकता। सदीयों से यह दलित समाज इन संवर्णो की गुलामी में जी रहा है। उनके उपर अब भी अन्याय, और अत्याचार, शोषण होता रहा है। यह एक दुःख की बात है। आज हमारा भारत आझाद होकर भी आज कई राज्यों में ऐसी स्थिती है जो दलित महिला हो या पुरूष हो उन्हें अब भी गुलामी में जिना पड रहा है।

इस समाज में उनके लिए कोई महत्व रहा ही नही वह समाज शिक्षीत होकर संघठीत होकर भी उनके उपर आज भी उनके अपने हक्क या अधिकारो से दुर भगाया जा रहा है। उन्हे गुलामी मे रखने का प्रयास हो रहा है। इसका वास्तविक रूप हमे समाज के सामने लाना है। और उनके अधिकारो के प्रति उन्हे जागृत करना है। इस समाज की त्रासदी को हमे अपना दुःख समझकर उनकी समस्याओं को हमे सुलझाना है। उनके हनन को हमे रोकना है। आज हमारे भारत में सभी को समानता से या सभी को सम्मान से जिने का हक्क है।

सामाजिक, आर्थिक, धार्मीक, राजनैतिक, शैक्षणिक इन सभी परिस्थितीयों में दलितो को भी बराबरी का स्थान देना चाहिए इस लिए कई नेताओं ने और समाज सुधारकोने प्रयास किया है। और इन्हे संविधान ने इन दलितो को अपने अधिकारों के प्रती जाग्रत करने उनके अधिकार दिए है। लेकिन आज भी हमारे समाज में उच्य-निच्यता और जातिवाद बढ़ता ही जा रहा है। और इस समाज को कही न कही हिंनता की भावना से देखा जा रहा है। इन दलितो को अन्याय अत्याचार, अंधविश्वास, पीड़ा रूढी, परंपरा, कर्मकांड, इस सभी से मुक्त करना ही हमारा कर्तव्य है और इनका यथार्थ चित्रण समाज के सामने लाने का प्रयास आवश्य करना होगा।

इस तरह से दलितो को उनके जीवन में आए हुए कठिनाईयाँ का किस प्रकार से सामना करना पडा। इनका जीवन संघर्ष किस प्रकार रहा है उसका वास्तविक और यथार्थ रूप से मैं परिचित हुँ। दलितो का दुख, दर्द, यातना पीड़ा, जातिवाद, उपेक्षा, छूआछूत इन सभी को में जानता हुँ इसलिए में ऐसे उपेक्षित विषय पर यांनी की दलित जीवन संघर्ष इस विषय पर मै अनूसंधान करना चाहता हुँ।

शोध चयन, कथन एवं प्रस्तुतिकरण :

हिंदी साहित्य के गहन अध्ययन चिंतन के पश्चात अनुसंधान के लिए मैंने "मोहनदास नैमिशराय के कथा साहित्य में दलित जीवन संघर्ष" इस विषय का चयन किया है।

परिकल्पना :

मोहनदास नैमिशराय के कथा साहित्य में दलित जीवन संघर्ष की वास्तविकता का चित्रण हुआ है।

शोध उद्‌देश :

१) मोहनदास नैमिशराय के कथा साहित्य में दलित जीवन संघर्ष का यथार्थ और वास्तविकता को स्पष्ट करना।

२) दलित जीवन संघर्ष या दलितो पर सवर्णो ने किए अन्याय अत्याचार शोषण को स्पष्ट करना।

३) हमारे समाज में दलित लोगो के जिवन में आनेवाली दिक्कते और जातिवाद किस प्रकार से हो रहा है इसकी वास्तविकता को स्पष्ट करना।

शोध पद्धती :

शोध अध्ययन के लिए मैं चिंतन एवं विश्लेषण पद्धती का प्रयोग करूँगा। इस के अलावा भी यथा संभव शोध पद्धतीका भी उपयोग किया जाएगा।

संबंधीत साहित्य का अध्ययन :

इस अनूसंधान संबंधित साहित्य के अध्ययन के अंतर्गत दलित जीवन संघर्ष को व्यक्त करने वाले कथा साहित्य में मुक्तिपर्व, मुझे क्या खरीदोंगें, आज बाजार बंद है, जख्म हमारा, आवाजे, हमारा जवाब कथा साहित्य प्रमुख है। इसके अलावा समाचार पत्र, मासिक, साहित्यीक पत्र-पत्रिकाएँ, शोधग्रंथ, इंटरनेट आदी का उपयोग करूँगा।

शोध अध्ययन का महत्व :

प्रस्तुत शोध अध्ययन भारतीय दलित जीवन संघर्ष एवं दलितो के जीवन में आनेवाली विविध समस्याओं का अध्ययन प्रस्तुत किया है। आज समानता के लिए या भारत को एकता में

बाँधने के लिए इसकी अत्याधिक उपयोगीता है। यह शोध अध्ययन दलितो के जीवन में आए दु:ख और पिड़ा पर आधारीत शोध करने वाले छात्रों को भी साहयता करेगा।

प्रस्तुत अनूसंधान को निम्न रूप से अध्यायो में विश्लेषित करने की योजना है।

१) मोहनदास नैमिशराय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

२) दलित संघर्ष संकल्पना एवं स्वरूप

३) हिंदी के दलित उपन्यासों का परिचय

४) मोहनदास नैमिशराय के उपन्यसो में विद्रोह का स्वर

५) मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासो में अभिव्यक्त दलित जीवन संघर्ष

६) मोहनदास नैमिशराय के कहाीनयों में अभिव्यक्त दलित जीवन संघर्ष

७) भाषा एवं शैली

➢ उपसंहार

प्रथम अध्याय :

"मोहनदास नैमिशराय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रस्तुत प्रथम अध्याय में व्यक्तित्व, कृतित्व का स्वरूप स्पष्ट करते हुए मोहनदास नैमिशराय का जीवन परिचय, जन्म, बचपन, माता-पिता, भाई-बहन, परिवार उनकी आदते आदि का विस्तृत विवेचन किया जाएगा। साथ ही साथ उनके उपन्यास, कहानी नाटक, आदी का परिचय दिया जाएगा।

द्वितीय अध्याय :

"दलित संघर्ष संकल्पना एवं स्वरूप"

प्रस्तुत अध्याय में दलित संघर्ष इस शब्द की परीभाषा, अर्थ संकल्पना एवं स्वरूप को स्पष्ट किया जाएगा।

तृतीय अध्याय :

"हिंदी के दलित उपन्यासों का परिचय"

प्रस्तुत अध्याय में हिंदी के अन्य दलित लेखको द्वारा लिखे उपन्यासों का परिचय दिया जाएगा। जैसे 'छप्पर' जयप्रकाश कर्दम, 'जस-तस भई सवेर' सत्यप्रकाश आदी हिंदी के दलित उपन्यासों का परिचय दिया जाएगा।

चतूर्थ अध्याय :

"मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में विद्रोह का स्वर"

प्रस्तुत अध्याय में उपन्यासकार ने अपने उपन्यासों में दलित जीवन संघर्ष का विद्रोह किस प्रकार से हुआ है। उनका शोषण किस तरह से हुआ है इसे स्पष्ट किया जाएगा। दलितो पर हुए अन्याय, अत्याचार और सामाजिक, धार्मीक, राजनैतिक, शैक्षणिक, आर्थिक विद्रोह का उदाहरणों के साथ चित्रण किया जाएगा।

पंचम अध्याय :

"मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में अभिव्यक्त दलित जीवन संघर्ष"

प्रस्तुत अध्याय में मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासो में दलित जीवन संघर्ष का चित्रण किया जाएगा। जैसे की दलितो को अपने अधिकारो के लिए किस प्रकार से संघर्ष करना पड़ा। इतना ही नही बल्की उन्हे शिक्षा ग्रहण करते समय किस प्रकार से जातिवाद का सामना करना पडा। समाज में जीवन जीते समय उन्हे कितनी पिडा सहनी पडी उनका शोषण किस प्रकार से किया। धार्मिक भेदभाव को किस प्रकार से सामना करना पडा इन सभी संघर्ष का चित्रण इस अध्याय में प्रस्तुत किया जाएगा।

जैसे - मुक्तिपर्व में दलितो की सामाजिक स्थिती :

लेखक ने इस उपन्यास में दलितो को संवर्ण समाज द्वारा किस प्रकार से गुलामी मे रखा था इसका उदाहरण दिया है जैसे आजादी के पहले से ही दलित समाज गुलामी में जीवन जी रहा था। आजादी मिलने के बाद इन दलित लोगों को इस गुलामी से मुक्ति मिलेगी ऐसी आशा रहती है इस उपन्यास का मुख्य नायक बंसी है और बंसी एक नवाब के घर पर काम करता है उन्हे कई लोगो से आजादी मिलनेवाली है ऐसा सुना था वह खुश था आजादी यह शब्द सुनकर अब उन्हे लगता था कि कोई भी किसी का गुलाम नही रहेगा सभी स्वतंत्र होगे। लेकिन नवाब आजादी मिलने के बाद भी उन्हे आजाद नही करना चाहता उन्हे गुलाम बनकर रखना ही पसंद करता है। नवाब को लगता है अगर बंसी आजाद हो गया तो उनके हवेली पर अब कौन काम करेगा। इसलिए समय-समय पर नवाब अली बरस पडते है, उसे गुलामी जैसा व्यव्हार करते है। तब बंसी कहता है ; “हॉ-हॉ जा रिया हुँ। मैं थुक्कूगाँ भी नही हियॅा पर।” यहॉ स्पष्ट है आजादी मिलने पर अपने जीवन को नया आयाम देने के लिए बंसी संघर्ष करना चाहता है। उनके विचार से उन्हे अब इस गुलामी से मुक्ति मिली है। दलित समाज अब शिक्षा ग्रहण करना चाहता है और इस गुलामी से या सदियो से लदी गुलामी की जखड़ोसे दुर जाना चाहता है।

आज बाजार बंद है :

हमारे भारतीय समाज मे तो दलितो के साथ-दुरव्यवहार किए ही लेकिन इस हिंदु समाज ने स्त्रियों को दुय्यम दर्जा दिया है। प्राचिन काल से लेकर आज तक स्त्रियों को दुय्यम स्थान दिया है। और इसमें तो दलित स्त्रियों को तो दलितो में भी दलित माना गया है। लेकिन हमारे समाज में हिंदु स्त्री हो या ब्राम्हण स्त्री हो या चाहे दलित स्त्रि हो उसके तो चार दिवारों में बंद कर दिया है। मराठी में कहावत है -

“चुल आणि मुल” इतना ही महिलाओं के हित के लिए है।

महिलाओं को इस जाल से निकालने के लिए कई समाज सुधाराको ने कार्य किया है। इसमें महात्मा फुले, राजर्षी शाहु महाराज, डॉ. बाबासाहेब आदि।

"आज बाजार बंद है" इस उपन्यास में भी लेखक ने ऐसी महिलाओ का चित्रण किया है। जिन्हे इस समाज सिर्फ उनकी वासना और शरीर का भुखा है। इस उपन्यास में वेश्याओं का चित्रण किया है। जो दलित महिलाओं को गाँव के अमिर लोग, पटेल लोग किस प्रकार से वेश्या बनाते है। इतना ही नही बल्की धर्म के नाम से औरते देवदासी बन मंदिरों में एय्याशी का साधन बन जाती है। वेश्या कहती है - "वह पुरूष खास जाति के दबदबे वाले पूरूष थे। सांमत और पटेल अधिक रहते थे। कभी-कभी एक ही रात में अनगिनत पूरूष हो जाते थे।" है कि धर्म के नाम से मंदिरो में दलितो कों प्रवेश नही दिया है, लेकिन धर्म के नाम से देवदासी बन जाने पर इन्हें मंदिर में प्रवेश दिया जाता है। देवदासीयों को ही इन धर्म के ठेकेदारों ने वेश्या बना दिया हैं। उनका यहॉ पर मानसिक शोषण किया जा रहा है। वह शबनम, पार्वती और फुल आदि का जीवन बरबाद हो गया। वह भोगदासी बन चूकी है। उनकी आस, तडप, भावना, वेदना कोई भी नही जातना। यह वेश्या इस इंतजार में है कि उनका जीवन कब बदलेगा इस जंजाल से उन्हे कौन बाहर निकालेगा। इस प्रकार से लेखक ने इस उपन्यास में दलित स्त्रीयों का सामाज किस प्रकार से शोषण कर रहा है और इस वेश्या पेशे में दलित ही महिला क्यों आती है इसका यथार्थ और वास्तविक चित्रण समाज के सामने लाने का प्रयास किया है।

षष्ठ्म अध्याय :

"मोहनदास नैमिशराय के कहानी में अभिव्यक्त दलित जीवन संघष"

प्रस्तुत अध्याय में मोहनदास नैमिशराय के कहानी संग्रह में अभिव्यक्त दलित जीवन संघर्ष प्रस्तूत किया जाएगा। उनके कहानी संग्रह है आवाजे और हमारा जवाब इन कहानी में दलितो के जीवन कि यातनाएँ, पिड़ा, अन्याय, अत्याचार, जाति-भेद, वेदना, त्रासदी, दुःख, को दलित समाज ने किस प्रकार से सहा है उसे मुक्ति पाने के लिए जीवन में किस तरह का उनहे संघर्ष करना पडा इसका चित्रण इस अध्याय में प्रस्तुत किया जाएगा।

सप्तम अध्याय :

भाषा एवं शैली :

इस अध्याय में लेखक के कथा साहित्य में आए भाषा शैली का प्रयोग कौन-कौन सी भाषा शैली का लेखक ने अपने कथा साहित्य में प्रयोग किया है इसका चित्रण किया जाएगा।

उपसंहार :

उपसंहार में प्रस्तुत शोधकार्य के निष्कर्ष को सारांश में प्रस्तुत किया जाएगा।

शोधछात्र

सावते राजू अशोक

शोध-निर्देशक

प्रा.डॉ.जलालखान पठान
शंकरराव चव्हाण महाविद्यालय
अर्धापूर.